ISO 9001:2015

astroblessings.com

Path to peace and prosperity

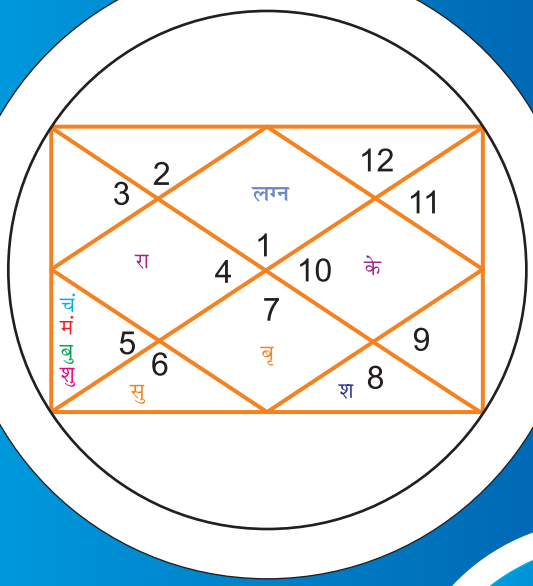

ज्योतिष रिपोर्ट

आने वाले 5 वर्ष कैसे रहेगें

श्रीमान

जगदीश शर्मा

60/81, Rajat Path, Mansarovar, Jaipur, Rajasthan - 302020, India

info@astroblessings.com

श्री अमित कुमार जी,

आपका भाग्यफल भेजा जा रहा है।

तुला लग्न

आपके जन्म के समय क्रांतिवृत्त के पूर्वी क्षितिज पर तुला राशि उदित हो रही थी, इसलिए आपका लग्न तुला है। आपका स्वभाव एवं व्यक्तित्व तुला राशि के अनुसार है।

तुला वायु तत्व राशि है। आप शीतल मंद बयार की भांति शीतल हैं। कला-प्रवीण, शिष्ट और सुन्दर शुक्र ग्रह आपके लग्न के स्वामी हैं। आप शिष्ट एवं साहसी हैं। इस राशि का प्रतीक चिह्न तुला है, आप जीवन के हर एक क्षेत्र में संतुलन स्थापित कर सकते हैं ,चाहे सामाजिक संबंध हों या निजी व्यवसाय। कार्यों में एकाग्र होकर लगे रहने के कारण आप औरों से अधिक सफलताएं प्राप्त कर लेते हैं। प्राकृतिक रूप से आप सौंदर्य, विलासिता, कला और गुप्त विद्याओं के प्रेमी हैं या तो आप इन विषयों में लिप्त रहते हैं अथवा इन्हें संरक्षण देते हैं। आप सामाजिक रूप से सक्रिय रहते हैं और मानवता के हित में कार्य करते हैं। आपका मित्र व्यवहार (Friend Circle) विशाल होता है। तुला चर राशि है। आप आसानी से दूर देश की यात्राएं करने को तत्पर रहते हैं। आप में अपने ज्ञान को बढ़ाने की उत्कृष्ट जिज्ञासा बनी रहती है। जीवन में संतुलन से शक्ति आती है।

संगठनात्मक एवं विकास करने के गुणों के कारण आपमें नेतृत्व शक्ति निहित है। आप दृढ़ एवं कठोर विचारों के व्यक्ति हैं। यह पुरुष राशि है। यदि जरूरत आ पड़े तो आप आंदोलन पर उतारू हो उठते हैं और सक्रियता एवं सजगता से नेतृत्व करने लगते हैं। आप सुख-सुविधा एवं विलासप्रिय हैं परन्तु संतुलन स्थापित करते हुये आप एक अच्छे ध्यान साधक जी बने रहते हैं। आपको यह वरदान प्राप्त है कि आप किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले सिक्के के दोनों पहलुओं पर विचार करते हैं। इसलिए आप न्यायपूर्ण तरीके से निर्णय लेते हैं। आप दूसरों की मानसिकता को आसानी से समझ लेते हैं। आपके व्यवहार में सुविधा एवं विलासिता अधिक हैं। कभी-कभी आप बहुत निरकुंश बन जाते हैं। आपकी कार्यप्रणाली धीमी है और कई बार आप आलसी हो जाते हैं तथा भावनाएं आप पर राज करती हैं। यदि आप अपने स्वभाव में निहित इन दुर्गुणों पर नियंत्रण पा लें तो आप लोगों का दिल जीत सकते हैं।

महात्मा गाँधी, नेपोलियन, चैतन्य महाप्रभु, दादा कोंडके, दादा साहिब फालके, देवानंद, डॉ. हरिवंश राय बच्चन, जे.आर.डी. टाटा, जॉन कीट्स, माधुरी दीक्षित, महात्मा ज्योतिबा फूले, मीना कुमारी आदि सभी महान व्यक्तित्व तुला लग्न में जन्मे थे।

जन्म नक्षत्रः उत्तराभाद्रपद

उत्तराभाद्रपद शब्द का अर्थ है- 'पश्चातवर्ती भाग्योदय'। आपके आसपास के लोग सदैव आपको समझ नहीं पाने की शिकायत करते रहते हैं। आप सदैव हवा के रुख को देखकर काम करते हैं परन्तु अपने निर्धारित लक्ष्य के साथ कोई समझौता नहीं करते। इस नक्षत्र पर शनि और गुरु का प्रभाव रहता है। आप कभी भी जल्दबाजी में नहीं रहते तथा धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा कर सकते हैं। आप सदैव बड़ा सोचते हैं तथा सबके हित की बात करते हैं। स्वाभाविक रूप से आप

महत्वाकांक्षी, समझदार और प्रभावशाली प्रकृति के हैं। आप एक अच्छे सलाहकार भी बन सकते हैं। आप दूसरों के निराश मन और नकारात्मक भावनाओं को समझकर उनका तनाव कम करने में सफल रहते हैं। आप कठोर और विषम परिस्थितियों में भी संतुलित ढंग से कार्य करने में विश्वास करते हैं। आपका आत्मनियंत्रण एवं आत्मानुशासन उत्तर श्रेणी का है। आप आध्यात्मिक क्षेत्र में बहुत करने की क्षमता रखते हैं।

आपके नक्षत्र के स्वामी देवता अहिर्बुधन्य हैं जो अथाह समुद्र के शुभ एवं हितकारी नाग देवता हैं। स्वभाव में आप उदार हैं। आप अन्तर्मुखी रहना पसंद करते हैं और समाचारों में रहना पसंद नहीं करते। आप उर्वरा बुद्धि एवं सृजनात्मक मस्तिष्क के धनी हैं। केवल एक ही बात है कि कोई आपको एक बार अभिप्रेरित कर दें या आपकी शक्ति को स्मरण दिली दे तो फिर आप रुकने का नाम भी नहीं लेते। उत्तराभाद्रपद को नक्षत्र को 'योद्धा नक्षत्र' भी कहते हैं। कठोर परिस्थितियों में भी आप ऐसा समाधान लेकर उपस्थित होते हैं कि सब लोग उसे स्वीकार कर लेते हैं।

आप जीवन के प्रत्येक क्षण को खुशी से जीना चाहते हैं एवं खुशियां बिखेरना आपकी आदत में हैं। आपकी उदारता और दानशीलता सदैव प्रशंसनीय रहती है।

आपके व्यक्तित्व का प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिलता है जब आप गुस्से में होते हैं परन्तु आपको अपने क्रोध पर नियंत्रण करना आता है। अकर्मण्यता का स्वभाव कभी-कभी आप में आलस्य और लापरवाही भर देता है। आपके अंदर छिपे विचारों में यदि नकारात्मक भाव उत्पन्न हो जावें तो आप दुष्कर्म भी करने को तैयार हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में आप अपने शत्रु को पराजित करके ही दम लेते हैं।

आपका जन्म नक्षत्र इंदिरा गांधी, अब्राहम लिंकन, हिलेरी क्लिंटन के समान है।

जन्म राशि मीनः आपके चंद्रमा भाव प्रधान एवं जलीय राशि में स्थित हैं इसलिए आप भावनाप्रवण एवं संवेदनशील व्यक्ति हैं। आपके स्वभाव में व्याप्त शुभता एवं सहजता दूसरों के दिलों को जीत लेती है। आप पूरा ध्यान रखते हैं कि आपके कारण किसी की भावना आहत नहीं हो परन्तु आप अपनी भावनाओं और संवेदनाओं को किसी के समक्ष व्यक्त नहीं करते और न ही ऐसा होने देते हैं। आप अधिक से अधिक सीखने एवं ज्ञानार्जन करने की जिज्ञासा रखते हैं। आपको एक विद्वान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में सम्मान मिलता है। आप अपने वाक्चातुर्य एवं बुद्धिमानी से दूसरों पर अमिट छाप छोड़ते हैं। आप बहुत साहसी व्यक्ति हैं और सृजनशील मस्तिष्क होने के कारण श्रेष्ठतम कार्य करने की चेष्टा करते हैं। आप एक धार्मिक व्यक्ति हैं और ईश्वर में पूर्ण विश्वास एवं आस्था रखते हैं तथा आपका विश्वास होता है कि ईश्वर शक्ति एवं आत्मविश्वास प्रदान करते हैं। आपका एक स्वप्निल संसार होता है तथा जीवन के कठोर यथार्थ से आप प्रायः बचने के प्रयास करते हैं। भावनात्मक रूप से आप एक बलवान व्यक्ति हैं। आप सिद्धान्त प्रिय एवं उदार हैं। आपको अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करना आता है। आपको स्वयं के लिए भी जीना चाहिए। आप अनेक धर्मार्थ कार्य करते हैं, तीर्थाटन करते हैं तथा दूर देशों की यात्राएं करते हैं।

प्रथम भावः आपकी पत्रिका में लग्न में सूर्य, गुरु और शुक्र स्थित हैं। साथ ही लग्नेश शुक्र वक्री व अस्त होकर स्थित हैं।

राजसी एवं शासक ग्रह सूर्य आपको साहसी बनाते हैं तथा आपको चुनौतियों का सामना करने हेतु प्रबल इच्छा शक्ति प्रदान करते हैं। आप एक जानेमाने व्यक्ति हैं तथा मित्रगण में आपको सम्मान मिलता है। आपको राजकीय अधिकारियों से पूर्ण समर्थन एवं सहयोग मिलता है। आप घोर अहंकारी, घमण्डी हैं ओर आपका घमण्ड आपके लिए समस्याएँ उत्पन्न करता है। आप निर्भीक एवं अवसरवादी हैं। आपका व्यवहार क्रूरता, कठोरहृदयी एवं अधीरता लिये हुये होता है। आप अपने निर्णयों पर दृढ़ रहते हैं तथा आपको राजनीति के क्षेत्रों में सफलता मिल सकती है और आप जीवन में सुख-सुविधाओं का भोग करते हैं। आपको दृष्टि संबंधी दोष हो सकते हैं।

आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित सुंदर और शुभ स्थिति का शुक्र आपको अपने विषयों से लाभान्वित करता है। आप एक विद्वान व्यक्ति हैं तथा जीवन में सुख-सुविधाओं का भोग करते हैं। आप कार्य को पूजा मानते हैं और प्रत्येक कार्य को अपने ही ढ़ग और तरीके से करते हैं। आप भरपूर आभूषण धारण कर सकते हैं अथवा आभूषण निर्माण कलाओं से जीविकोपार्जन करते हैं।

आप अपनी जीविका उपार्जन के लिए संगीत, नृत्य और अभिनय कला को अपना सकते हैं। आप आशावादी हैं तथा ईश्वर में आपकी गहरी आस्था है। आप सुन्दर-सुन्दर वस्त्राभूषणें के लिए आपको कठोर परिश्रम करना पड़ता है। आप एक संवेदनशील एवं क्षमावान व्यक्ति हैं। आपकी रहस्यविद्याओं में भी अभिरूचि हो सकती हैं।

बृहस्पति की यह स्थिति आपको चुंबकीय व्यक्तित्व एवं आशावादी भावना प्रदान करती है। अपने प्रभावी व्यक्तित्व के कारण आप जनसंपर्क जैसे कार्यों में सफल रहते हैं। आपकी भद्रता और प्रसन्नचित्तता सर्वत्र प्रशंसनीय है। आप जीवन में विलासिताओं के भोग करते हैं। आप किसी भी कार्य को करने से पहले उसका समुचित मूल्यांकन करते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के कारण आप प्राचीन ग्रंथों में रूचि रखते हैं। आप बुजुर्गों का सम्मान करते हैं। अपने अनवरत् प्रयासों के बल पर आप प्रभावशाली व्यक्ति बन जाते हैं कभी-कभी आप काम में लगे रहते हैं तथा स्वास्थ्य बिगाड़ लेते हैं चूंकि आपके शरीर में मोटापें का गुण निहित है। अत: आपको आहार-विहार का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। आप जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कुछ न कुछ करना चाहते हैं।

द्वितीय भाव: कुटुंब, वाणी, दूरदर्शिता और धन-संपदा का कारक भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि में बुध स्थित हैं।

बुद्धिमान बुध आपकी जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में स्थित हैं जो आपको उत्कृष्ट वाक्पटुता, काव्य प्रतिभा, धन एवं प्रखरता प्रदान करते हैं। आप अपनी बुद्धि चातुर्यता से प्रचुर धन कमा लेने की सामर्थ्य रखते हैं। आपकी मधुर वाणी आपको आकर्षण का केन्द्र बनाए रखती है। आप व्यवहार कुशल हैं तथा दुष्कर्मों से डरते हैं। आप सत्यप्रिय हैं तथा बहुत होशियारी से सत्य बोलते हैं। बुध नवमेश और द्वादशेश हैं। **आपकी कुण्डली में द्वितीय और द्वादश भाव के स्वामियों में परस्पर परिवर्तन है जो समय-समय पर आर्थिक उतार-चढ़ाव की सूचना देता है।** यद्यपि बुध नवमेश भी हैं इस कारण थोड़ा बचाव हो जाएगा।

तृतीय भाव: तृतीय भाव पराक्रम, साहस, बुद्धिमता एवं अनुज भ्राता का है। आपकी जन्मपत्रिका के तृतीय भाव में धनु राशि है जिसके स्वामी बृहस्पति लग्न में स्थित हैं। तृतीयेश, षष्ठेश का लग्न से संबंध यह दर्शाता है कि आपकी प्रतिस्पर्द्धात्मक शक्ति बहुत अच्छी है। कठिन से कठिन परिस्थितियाँ भी आपके मानसिक संतुलन को डिगा नहीं पाती हैं और आप धैर्य बनाए रखते हैं। यद्यपि लग्न में स्थित सूर्य कभी-कभी अनावश्यक क्रोध भी करा देते हैं।

अपने छोटे भाई-बहिनों से मधुर संबंध बनाए रखने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने होंगे क्योंकि तृतीय बृहस्पति अस्त भी हैं।

चतुर्थ भाव: चौथा भाव माता, अचल सज़्पत्ति, शिक्षा, वाहन और सामान्य सुखों का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में मकर राशि है जिसके स्वामी शनि सप्तम भाव में अपनी नीच राशि में वक्री होकर स्थित हैं।

पंचम भाव: पंचम भाव संतान, भावनाओं, ईश्वर में आस्था तथा पूर्वजन्म के कर्मों के फल का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के पंचम भाव में कुंभ राशि है जिसके स्वामी शनि सप्तम भाव में स्थित हैं।

रहस्यों के नैसर्गिक कारक शनि अग्नि प्रधान मंगल की राशि में स्थित हैं इसलिए आप साहसिक कार्यों में गहन अभिरुचि रखते हैं और विशेष रूप से सक्रिय एवं उत्साहित रहते हैं। आप में दूसरों का विरोध करने की प्रवृत्ति है और इसलिए आप स्वयं के लिए असमंजस की स्थिति उत्पन्न कर लेते हैं। आपको अपनी बुद्धि के समुचित उपयोग के लिए अपने व्यवहार में व्याप्त झगड़ालू प्रवृत्ति में नियंत्रण करना होगा। क्रोधी स्वभाव के कारण आप ईर्ष्यालु बन जाते हैं। ऐसे

समय में आप अपने चेहरे पर मुस्कान नहीं आने देते और आपके निकटतम सगे संबंधी भी आपको समझ नहीं पाते हैं। आपके जीवन में बार-बार अनपेक्षित एवं अवांछित खर्चे आते रहते हैं जिससे आप पर वित्तीय भार बढ़ जाता है। आपको अपने व्यवहार में मधुरता लानी चाहिए और जीवन में संबंधों को बनाए रखने के लिए नया काम करते रहना चाहिए।

आपकी जन्म पत्रिका के पंचम भाव में कुंभ राशि में राहु स्थित हैं।

आपकी जन्म पत्रिका में राहु अनुकूल और शुभ स्थिति में है। आपकी भावनाओं की दूरदर्शी उड़ान होती है और इसलिए आप भावी विचारों को जन्म दे सकते हैं। यदि एक बार आप टीम स्प्रिट (दलीय भावना) का विकास कर लेते हैं तो आप अपने समूह में आदर्श के रूप में उभर जाते हैं। आपके भीतर दर्शनशास्त्री छिपा हुआ है जो समय-समय पर आपमें भोगविलास की इच्छाएं पनपाता रहता है। आप सहज मन के व्यक्ति हैं और अपने विकास के लिए नए विचारों और तकनीक को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। आप ज्योतिष जैसे रहस्यात्मक विषयों में अच्छी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। संयत व्यवहार और मृदु स्वभाव के बल पर आप बहुत प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकते हैं। जीवन में आपको बहुत अवसर प्राप्त होंगे परन्तु यह आप पर निर्भर करता है कि आप इन अवसरों का किस प्रकार अधिकतम उपयोग करते हो क्योंकि ऐसी भी संभावनाएं हैं कि आप जीवन में एक या दो महत्वपूर्ण अवसरों पर चूक जाएं।

षष्ठम भाव: छठा भाव रोग, ऋण, रिपु और प्रतिस्पर्धा का है। आपकी जन्मपत्रिका के षष्ठम भाव में मीन राशि है जिसके स्वामी बृहस्पति लग्न में स्थित हैं। जिसका वर्णन लग्न में किया जा चुका है।

सप्तम भाव: सप्तम भाव विवाह, वासना, वैवाहिक स्थिति और व्यापारिक साझेदारी आदि का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के सप्तम भाव में मेष राशि है तथा सप्तमेश मंगल द्वादश भाव में स्थित होकर सप्तम भाव को प्रभावित कर रहे हैं।

मेष राशि अग्नि तत्व एवं चर राशि है जिसके स्वामी ग्रहों में सेनापति मंगल हैं। शनि न्यायप्रिय एवं भद्र ग्रह माने जाते हैं। यद्यपि शनि न्यायप्रिय ग्रह हैं तथापि वह मेष राशि में शुभ नहीं माने जाते हैं क्योंकि यह शनि की नीच की राशि है। आप मंगल और शनि दोनों ग्रहों के सम्मिलित प्रभाव में रहते हैं तथा उनका यह प्रभाव आपके व्यवहार में भी झलकता है। आप सन्मार्ग से भटक सकते हैं। आप जीवन यापन के लिए अनुचित साधनों का सहयोग ले सकते हैं। आपमें कुछ बुरी आदतें होती है जिसके कारण कोई भी व्यक्ति आपको पक्का मित्र बनने की अपेक्षा आपको अपना शत्रु ही समझता है। आप अपने सगे-संबंधियों के प्रति निष्ठावान नहीं रहते हैं और यही कारण है कि वे समय पर आपकी भी सहायता नहीं करते। कभी-कभार आपके स्वभाव में आवेश आदि आ जाते हैं जिससे आप कटु एवं स्वार्थी बन जाते हैं। आप अस्थिर मस्तिष्क के व्यक्ति हो सकते हैं।

आप निद्देश्य यत्र तत्र घूमते रहते हैं। आप दूसरों पर निर्भर रहना पसंद करते हैं। निरर्थक प्रसाय आपको बहुत अधिक परेशानी में डाल देते हैं।

अष्टम भाव: अष्टम भाव आपदाओं, रहस्यों, भय, बाधाओं, गुप्त रहस्यात्मक विषयों आदि का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका में अष्टम भाव में वृषभ राशि है जिसके स्वामी शुक्र लग्नेश होकर लग्न में ही स्थित हैं जिसका वर्णन लग्न में किया जा चुका है।

नवम भाव: नवम भाव उपासना, धार्मिक आस्था, आपका आध्यात्मिक जुड़ाव, दार्शनिक विचारधारा, ज्ञान पिपासा, भाग्य और सुख समृद्धि का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में मिथुन राशि है जिसके स्वामी बुध द्वितीय भाव में स्थित हैं। वृश्चिक जल तत्व एवं स्थिर राशि है जिसके स्वामी मंगल हैं। बुध की इस भावना में स्थिति आपमें आलस्य एवं प्रमाद उत्पन्न करती है। आप अपनी शत-प्रतिशत क्षमता का उपयोग नहीं करते हैं। आपके जीवन में बाधाएं संकट आते हैं, इसलिए अपनी इच्छा शक्ति को प्रबल कर लेना चाहिए। कई बार आप क्रूर व्यवहार करने लगते हैं, इसलिए आपको अपने इस असंगत व्यवहार पर नियंत्रण करने के लिए कुछ कलात्मक कार्यों में मन लगाना चाहिए।

मित्र एवं सगे संबंधी बनाने में आपको बहुत सजग और सावधान रहना चाहिए। आपके कुसंगति में पड़ने की पूरी संभावना रहती हैं जिससे आपका समय एवं धन दोनों बरबाद होते हैं। आपके भीतर व्याप्त शक्ति एवं क्षमता पर अगर नियंत्रण नहीं रखा गया तो आप दुस्साहसी एवं कठोर हृदय बन सकते हैं। आपमें अत्यन्त क्रोधित हो जाने की प्रवृत्ति है तथा परेशानी या कठिनाई के समय आप निराश हो जाते हैं। आप कज़ी-कभी ऋण भी ले सकते हैं। स्वास्थ्य के संबंध में आपको विशेष सावधान रहना क्योंकि आपकी लापरवाही कई बार स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को जन्म देती है। आपकी स्पष्टवादिता के कारण लोग विरोधी बन जाते हैं। भाग्येश दूसरे भाव में होने से आपको पिता से लाभ होगा व पिता प्रसिद्ध होंगे।

दशम भाव: दशम भाव पिता, व्यवसाय, व्यापार, आजीविका, राजकाज से लाभ, प्रसिद्धि और प्रतिष्ठा आदि का है। आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में कर्क राशि है जिसके स्वामी चंद्रमा छठे भाव में हैं। दशमेश षष्टम भाव में होने से आपके जीवन में अनेक बदलाव आएँगे। दशम भाव में कोई ग्रह न होने के कारण तथा दशमेश चंद्रमा के शुक्र के नवांश में होने के कारण आपके आजीविका क्षेत्रों पर शुक्र का प्रभाव अधिक रहेगा।

आपका दशमेश शुक्र के नवांश में हैं। शुक्र सुंदर और विनम्र ग्रह है जो आपको चांदी रजत, आभूषण कला, रत्न व्यवसाय, चौपहिया वाहनों का व्यवसाय, सुगंधित वस्तुएं, विलासिता की वस्तुएं, कज़्यूटर्स, संगीत, नृत्य और अभिनय कला के क्षेत्र में जीविका प्रदान कर सकता है। आप एक अच्छे संगीतज्ञ, नर्तक अथवा दक्ष अभिनेता भी बन सकते हैं। आप फोटोग्राफी, चित्रकला और ऐसी ही अन्य कलात्मक वस्तुओं से भी धर्नाजन कर सकते हैं, सुंदर एवं आकर्षक डिजाइनों के वस्त्रों का व्यापार भी आपके लिए फलीभूत हो सकता है। आप सौंदर्य प्रसाधन बुटीक केन्द्र चला सकते हैं। आप रत्न और आभूषणों के व्यवसाय में धन अर्जित कर सज़्पन्न हो सकते हैं।

एकादश भाव: एकादश भाव बड़े भाई, आय, लाभ, जीवन में विलासिताओं तथा निपुणता का है। आपकी जन्मपत्रिका में एकादश भाव में सिंह राशि है जिसके स्वामी सूर्य लग्न में अपनी नीच राशि में नीच भंग योग बना रहे हैं तथा एकादश भाव में केतु स्थित हैं।

आपकी जन्मपत्रिका में केतु शाही राशि सिंह में स्थित है। आपमें प्रबल अन्तर्मुखता है जो अहंकार को जन्म देती है। आप चाहते हैं कि लोग आपका सज़्मान और अधिकार को मानें। अपनी प्रतिष्ठा के प्रति बहुत अधिक सजग रहने के कारण आप कोई ऐसा कार्य प्राय: नहीं करते जिससे आपकी प्रतिष्ठा पर आंच आवे। आप गंभीर होकर परामर्श देते हैं और चाहते हैं कि आपके परामर्श या राय पर गंभीरता से अमल किया जाए। आप ज्ञान प्राप्ति के लिए कठोर परिश्रम करते हैं और प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहते हैं तथा अपने आस-पास के लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बने रहते हैं। किसी भी कार्य की पराकष्ठा तक पहुंचना आपके स्वभाव का अभिन्न अंग है। आपको अपनी असीमित ऊर्जा शक्ति और गुस्से पर नियंत्रण रखना चाहिए तथा दूसरों को अनावश्यक परेशान नहीं करना चाहिए। अपने व्यवहार में कुछ सुधार और नम्रता लाने से आप अपना और अधिक बौद्धिक विकास कर पाने में सफल रहेंगे।

द्वादश भाव: द्वादश भाव अवसाद, शैयासुख, हानि और व्यय, उदारता तथा विदेश संबंधी मामलों का भाव है। आपकी जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में कन्या राशि है जिसके स्वामी बुध द्वितीय भाव में स्थित हैं। द्वादशेश यदि द्वितीय भाव में हों कभी-कभी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ सकता है तथा अनावश्यक खर्च बहुत होते हैं, आपको धन खर्च करने की आदत पर नियंत्रण करना चाहिए। ऋण के लेन-देन में आप सावधानी बरतें।

श्रीमान ..... जी,

आपकी जन्म लग्न तुला है। आपकी जन्म राशि मीन है और जन्म नक्षत्र उत्तराभाद्रप्रद है तथा वर्तमान में आप शुक्र महादशा में गुरु अन्तर्दशा में चल रहे हैं। आपको शुक्र महादशा 17 नवज़्बर, 2023 तक हैं और उसके बाद 6 वर्ष की सूर्य महादशा फिर 10 वर्ष की चन्द्रमा की महादशा, फिर मंगल, राहु इत्यादि की महादशाएं आएंगी।

विंशोत्तरी दशा महादशा के आधार पर आपका 21 वर्ष का दशाफल लिखा जा रहा है–

शुक्र–गुरु : (17.01.2014 से 17.09.2016) – इस अन्तर्दशा काल में बहुत अधिक आर्थिक दबाव रहेगा और किसी न किसी कारण से आपकी जिज़्मदारियां बढ़ती चली जाएंगी, विवाद रहेंगे, एक विवाद समाप्त नहीं हुआ कि दूसरा विवाद सामने आ जाएगा। स्वास्थ्य भी नरम ही रहेगा और कुछ न कुछ समस्याएं चलती ही रहेंगी। जून , 2014 के बाद लेन–देन के मामलों में कई बार अप्रिय परिस्थितियाँ आएंगी परन्तु आप उनका निर्वाह ढंग से कर पाएंगे। घर परिवार में मंगल कार्य हो सकते हैं। पिता पक्ष के लिए यह समय थोड़ा सा शुज़ जाने वाला है। भूमि–भवन या वाहन के मामले में आप ऋण लेने की सोच सकते हैं। जमीन–मकान से सज़्बन्धित गतिविधियों में रुचि लेंगे। यह अच्छा समय है जिसमें अनिष्ट तो नहीं होगा परन्तु दबाव काफी रहेगा। माता के लिए यह अन्तर्दशा ठीक है और उन्हें पीहर पक्ष से या कहीं और से किसी लाभ व उपहारों की आशा रखनी चाहिए।

शुक्र–शनि: (17.09.2016 से 17.11.2019) – इस अन्तर्दशा में पद–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सन्तान के लिए शुभ समय है परन्तु जीवन साथी के लिए शारीरिक कष्ट बढ़ेंगे। इस समय भूमि–भवन से सज़्बन्धित मामलों में गतिविधियों तेज हो जाएंगी या वाहन परिवर्तन सज़्बन्धी गतिविधि होगी। जीवन साथी को स्वास्थ्य सज़्बन्धी समस्याएं रहेंगी।

इस समय सन्तानों के एडमिशन सज़्बन्धी गतिविधियों में सफलता मिल सकती है। यदि वे किसी छोटी प्रतियोगिता में बैठे हैं तो भी सफलता मिल सकती है। शनि का नीच भंग राजयोग होने से ये कई मामलों में लाभ देंगे। यद्यपि घर में दवाइयों का खर्चा बढ़ाएंगे। आजीविका के क्षेत्रों में थोड़े बहुत अवरोध का सामना करना पड़ेगा। जिस गति से काम चाहते हैं वह नहीं हो पाएगा। शनि पूजा–पाठ चाहते हैं या अन्य तरीकों से अपनी सेवा चाहते हैं। आपको चाहिए इस अन्तर्दशा काल में तेल का दान करें। काले तिल, और उड़द का दान करें और किसी शनि मंदिर में दीपक जलायें। गरीब व्यक्ति शनि के प्रतिनिधि हैं और उनका किसी न किसी तरीके से भला करें।

शुक्र–बुध: (17.11.2019 से 17.09.2022) – भाग्योदय का समय है। आपको इस अन्तर्दशा काल में प्रतिष्ठा का लाभ होगा। आर्थिक साधन बढ़ेगे और घर में मंगल कार्य होगा। नए कार्य में मन लगेगा और कुछ नई शुरुआत करने का मानस बन सकता है। जितने अधिक आर्थिक साधन होंगे उतने ही अधिक आप नई–नई योजनाओं पर विचार करेंगे। मित्रों की सलाह यद्यपि आप लेंगे परन्तु किसी न किसी निर्णय प्रक्रिया में गलती करेंगे। आपकी महादशा नाथ शुक्र यद्यपि

मालव्य योग बना रहे हैं परन्तु शुक्र अस्त होने के कारण उसका पूरा लाभ नहीं मिल पाएगा अत: इस महादशा की अन्तर्दशाओं में जो भी फल प्राप्त होंगे वे अनुपात में उतने नहीं होंगे जितने कि मिलने चाहिएं। शुक्र ग्रह के प्रभाव को बढ़ाने के लिए आप हीरा धारण कर सकते हैं अगर तुरन्त में हीरा धारण नहीं कर सकें तो उसके एवज में चांदी में जरकिन धारण कर सकते हैं। पांच सवा पांच रत्ती का पर्याप्त रहेगा। इसे कनिष्ठा या मध्यमा अंगुली में शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के एक घंटे के अन्दर-अन्दर जब कि शुक्र की होरा रहती है, धारण किया जा सकता है।

इस अन्तर्दशा में यात्राएं होंगी। खर्चे भी होंगे। घर परिवार में कोई मंगल कार्य होगा। उसमें भी आपका खर्चा होगा परन्तु जो बचत आप चाहते हैं उस ढंग से नहीं हो पाएगी।

शुक्र-केतु: (17.09.2022 से 17.11.2023) - यह समय थोड़े बहुत आर्थिक लाभ का है परन्तु सम्बन्धों को बनाए रखना बहुत बड़ी चुनौती होगी। भाई-बहिनों से भी सम्बन्धों में थोड़ी बहुत नरमी रहेगी तथा घर में भी कलह का वातावरण रहेगा। जीवन साथी का न केवल स्वास्थ्य खराब रहेगा बल्कि आपसी सम्बन्धों में भी कई तरह की परेशानियां रहेंगी।

इस समय आपके व्यक्तित्व के उस भाग का परिचय मिलना आवश्यक है जिसमें आप अपार धैर्य रखने की आवश्यकता है। इस सम्पूर्ण दशाकाल में आप स्वयं भी कई गलतियां करेंगे और सफाइयां देनी पड़ेंगी। आप क्रोध में आकर अन्य लोगों का अपमान कर सकते हैं और अगर आप ने ऐसा किया तो कुछ लोगों के मन में स्थायी ग्रन्थियाँ बन सकती हैं। ऐसा घर और आजीविका के क्षेत्र दोनों में ही होगा।

व्यक्तित्व को विशाल बनाने के लिए इस समय आपको पूजा-पाठ और ध्यान इत्यादि पर एकाग्र होना चाहिए। शारीरिक क्षमता के साथ-साथ मानसिक क्षमता का बढ़ना भी अति आवश्यक है। व्यावसायिक सम्बन्धों को बनाए रखने में बहुत समस्याएं रहेंगी। जो लोग कार्य की प्रकृति के अनुसार आपके साथ चल रहे हैं या भागीदार हैं उनके सम्मान का भी ध्यान रखना पड़ेगा और आपसे किसी के प्रति असहमति या अवज्ञा न हो जाए इसका भी ध्यान रखना पड़ेगा। सार्वजनिक रूप से कही गई बातें लौट कर आप तक आ सकती हैं। अत: आपको विशेष सावधानी बरतनी आवश्यक है। केतु का मंत्र जाप आपको लाभ दे सकता है और कबूतरों को ज्वार इत्यादि के दाने खिलाना लाभदायक हो सकता है।

सूर्य-सूर्य: (17.11.2023 से 06.03.2024) - समय परिवर्तनशील है और घटनाक्रम में अन्तर दिखने लग जाएगा। आपकी जन्म पत्रिका में एकादश भाव के स्वामी सूर्य नीच राशि में हैं और नीच भंग राजयोग बना रहेगा। इस कारण से पद-प्रतिष्ठा सम्बन्धित लाभ हो सकते हैं परन्तु सूर्य का षड्बल 0.72 होने के कारण ग्रहों में सबसे कम है अत: सूर्य महादशा के छह वर्ष के काल में आपको हर मामले में सावधानी बरतनी होगी। शरीर में अस्थियों के स्वामी सूर्य हैं। चूंकि लग्नेश व सूर्य, शनि और राहु से दृष्ट हैं अत: इस महादशा काल में दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। सूर्य के मंत्र का जप करना उचित रहेगा और सूर्य से सम्बन्धित सफेद वस्तुओं का दान करना आवश्यक है। वर्तमान अन्तर्दशा में कार्य पद्धति में और कार्य की प्रकृति में अन्तर आ सकते हैं। ये आपके ऊपर है कि आप कल्पना का कितना सहारा ले सकते हैं। कल्पना हर कोई कर सकता है परन्तु उचित समय पर ही उनसे लाभ उठाया जा सकता है। चूंकि आपके सूर्य ज्योतिष गणनाओं के हिसाब से कमजोर हैं अत: व्यक्ति चयन में और लाभ के लिए विषय चुनने में आप गलतियां कर सकते हैं। सूर्य ग्रह चाहते हैं आप उनके लिए पर्याप्त संख्या में मंत्र पाठ करें। सूर्य को अर्घ्य चढ़ावें और सफेद वस्तुएं व अन्य इत्यादि का दान करें। प्रात:कालीन सूर्य के दर्शन करना लाभदायक हो सकता है।

सूर्य-चंद्रः (06.03.2024 से 04.09.2024) - इस अन्तर्दशा में कामकाज की प्रकृति में अन्तर आ जाएगा। आप ऋण लेने की चेष्टा करेंगे तथा कहीं से विवाद भी आ सकता है। व्यर्थ के विवादों से बचने की चेष्टा करेंगे क्योंकि दशाक्रम ज्यादा अनुकूल नहीं है।

सूर्य-मंगलः (04.09.2024 से 10.01.2025) - भागीदारी के मामलों में गति आएगी। गृहस्थ जीवन में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। फरवरी-मार्च के महीने में गृहस्थ जीवन में इस समय कुछ समस्याएं हो सकती हैं। अत्यधिक कौशल से इस कठिन समय को पार करना है। क्योंकि मार्च-अप्रेल में ही जन्म से सप्तम भाव में गुरु होंगे और शनि, मंगल से दृष्ट रहने के कारण कुछ समस्याएं हो सकती हैं।

सूर्य-राहु (10.01.2025 से 05.12.2025) - सन्तान के लिए उन्नतिकारक समय है। अचानक लाभ के अवसर बनते हैं और एक सन्तान तकनीकी शिक्षा के बाद आजीविका के क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करेगी।

सूर्य-गुरु : (05.12.2025 से 23.09.2026) - यह अन्तर्दशा भी सन्तान के लिए शुभ है और सन्तान पक्ष की ओर से आप निश्चिन्त होने जा रहे हैं। सन्तान पक्ष के लिए कुल मिलाकर जनवरी, 2025 से सितज़्बर, 2027 का समय अत्यन्त शुभ है और इस अवधि में शिक्षा-दीक्षा, व्यवसाय, आजीविका और मंगल कार्य की सज़्भावनाएं बनती हैं।

सूर्य-शनिः (23.09.2026 से 05.09.2027) - एक सन्तान के लिए अच्छा प्रस्ताव आएगा परन्तु इसी समय जीवन साथी के लिए समस्या का समय है। स्वास्थ्य सज़्बन्धी दिक्कतें आएंगी तो घर में तनाव भी चल रहा होगा। दवाईयों पर खर्चे का समय है यदि आपने पर्याप्त सावधानी नहीं बरती और समय पर उपाय नहीं किए तो अधिक नुकसान हो सकता है।

सूर्य-बुधः (05.09.2027 से 12.07.2028) - ये भाग्योदय का वर्ष है। विरोधियों पर विजय प्राप्त करेंगे। आर्थिक लाभ होगा। एक से अधिक आजीविका के क्षेत्र होंगे और घर में या आस-पास मंगल कार्य होंगे। इस समय आप शनि की साढ़ेसाती की मध्यम ढैय्या में चल रहे होंगे अत: कार्यक्षेत्र में भी बहुत संघर्ष का समय चल रहा होगा क्योंकि भाग्य के स्वामी की अन्तर्दशा है अत: आप परिस्थिति से निकल जाने में सक्षम हो सकते हैं।

सूर्य-केतुः (12.07.2028 से 16.11.2028) - भाई-बहिनों के यहां कुछ कष्ट चल रहे होंगे। सज़्बन्धों को बनाए रखने के लिए अत्यधिक परिश्रम करना होगा। थोड़ा बहुत आर्थिक लाभ हो सकता है परन्तु मन ही मन बहुत ज्यादा असंतोष रहेगा और उच्चाटन की भावनाएं मन में रहेंगी।

सूर्य-शुक्रः (16.11.2028 से 17.11.2029)- स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह कठिन समय है। मूत्र विकार या प्रोस्टेट सज़्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। भोजन की शैली में परिवर्तन करना होगा। शक्तिवर्द्धक भोजन या दवाओं का प्रयोग करना आवश्यक हो जाएगा। आपको स्वास्थ्य रक्षा के लिए सभी जाँचें नियमित रूप से कराना चाहिए। इस अन्तर्दशा के साथ ही आप एक नए दौर में प्रवेश कर जाएंगे जिसमें लेना-देना विवाद और कर्ज अदायगी के मामले बड़े हो जाएंगे।

चंद्र-चंद्रः (17.11.2029 से 17.09.2030) - इस समय कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की शुरुआत हो सकती है। आप चारों तरफ हाथ-पैर मारेंगे और ऋण की आवश्यकता पड़ेगी। भूमि-भवन सज़्बन्धी गतिविधियों में तेजी आ जाएगी। बृहस्पति इस समय अनुकूल हैं और सन्तान सज़्बन्धी मामलों में सुधार की संभावनाएं बनती हैं। आप किसी भी विवाद से बचने की चेष्टा करें। कोई न कोई विवाद बना रहेगा। माता को स्वास्थ्य सज़्बन्धी समस्याएं बढ़ेंगी और सभी मामलों में उनकी स्थिति में सुधार होगा परन्तु स्वास्थ्य सज़्बन्धी कष्ट रहेगा।

चंद्र-मंगल: (17.09.2030 से 18.04.2031) - जीवन साथी को स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताएं रहेंगी। आप स्वयं को भी स्वास्थ्य सम्बन्धी गंभीर समस्याएं हो सकती हैं। हॉस्पिटल से और शल्य चिकित्सा के उपाय करने होंगे। भागीदारी के मामलों में तरह-तरह की समस्याएं रहेगी। कार्यनिवृत्ति का कार्यक्रम और आगे बढ़ेगा परन्तु आप एक काम छोड़कर दूसरे कार्य में व्यस्त हो जाएंगे। यह समय अत्यधिक सावधानी बरतने का है और आपके जीवन साथी को स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं कुछ ज्यादा ही रहेंगी।

चंद्र-राहु: (18.04.2031 से 17.10.2032) - सन्तान की उन्नति के लिए यह समय अच्छा है। उनके कामकाज में प्रगति होगी। सन्तानों के परिवार बढ़ेंगे और आपको सार्वजनिक रूप से सम्मान मिलेंगे। पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

चंद्र-गुरु: (17.10.2032 से 16.02.2034) - स्वास्थ्य सम्बन्धी सामान्य समस्याएं रहेंगी। कॉलेस्ट्रॉल बढ़ेगा, समय रहते उपाय कर लें। आर्थिक दृष्टि से थोड़ा दबाव में रहेंगे। ऋण की आवश्यकता पड़ेगी। सन्तान के कामकाज में एक तरफ सुधार चलेगा तो थोड़ा दबाव में भी रहेंगे।

चंद्र-शनि: (16.02.2034 से 17.09.2035) - यह आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी का समय है। सन्तानों के कार्यक्षेत्र में परिवर्तन आएंगे। उन्नति होगी। किसी एक सन्तान के जीवन में पीड़ा रहेगी। घर में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं और बढ़ेंगी और दवाओं पर खर्चा बढ़ेगा। यदि व्यावसायिक भागीदारियां हैं तो अति सावधानी से काम लेने की जरूरत है। आर्थिक दृष्टि से यह समय ठीक जा सकता है। भूमि-भवन सम्बन्धी मामलों में प्रगति होगी और कुछ नया करेंगे। भूमि में बढ़ोत्तरी होगी।

ग्रह-गोचर -

आने वाले वर्षों में बृहस्पति यद्यपि कुछ वर्ष तक अनुकूल रहेंगे परन्तु फिर भी मकर और कुम्भ राशि में रहते हुए शनि सन् 2020 से 2024 तक विशेष फल देंगे। 2025 की गर्मियों तक पहले तो भूमि-भवन और बाद में पद-प्रतिष्ठा का लाभ होगा। सन् 2023 से 2025 सन्तान की उन्नति के लिए विशेष है और परिवार में समृद्धि बढ़ेगी। 2027 भूमि-भवन के दृष्टिकोण से पुन: अच्छा है परन्तु यहां ऋण बढ़ेगा। कानूनी विवाद भी रहेंगे।

निकट भविष्य में भूमि-भवन से सम्बन्धित मामलों में तेजी आ जाने वाली है और 2014 के उत्तरार्द्ध से लेकर 2016 तक उत्तरार्द्ध तक न केवल आप वाहन बदलेंगे बल्कि भूमि-भवन में निवेश भी करेंगे। 2017 के बाद सन्तान की विशेष उन्नति देखने में आ रही है परन्तु खर्चे बहुत ज्यादा होंगे। यह बड़े खर्चों का समय चल रहा है और शिक्षा-दीक्षा और विस्तार के कार्यक्रमों बड़ा खर्चा होने वाला है। राहु-केतु यद्यपि 2015-16 में काफी अनुकूल रहेंगे परन्तु इनके विशेष फल 2020 के बाद ही देखने को मिलेंगे। यह भाग्य में बढ़ोत्तरी का समय है और आप आजीविका के क्षेत्रों में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे।

चन्द्रमा की महादशा में आपका जीवन संघर्ष बढ़ता हुआ नजर आ रहा है। आप को देन-दारियों से सम्बन्धित समस्याओं की चिन्ता रहेगी और कदाचित अकेले कुछ नहीं कर पाएंगे। सन्तान के सहयोग की आवश्यकता पड़ेगी। नकदी की समस्या यद्यपि रहेगी परन्तु भूमि और सम्पत्तियां बढ़ेंगी।

।। इति शुभम्।।

आपका शुभाकांक्षी

सतीश शर्मा

प्रधान संपादक, ज्योतिष मंथन, जयपुर